GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 5
September-October: 2026

समस्तीपुर जिले के सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ संगीता कुमारी
शिक्षाशास्त्र सहायक प्राध्यापिका
जे० पी० शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय
समस्तीपुर, बिहार

शोध-सार

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य बिहार के समस्तीपुर जिले के सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता की तुलना करना है। अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि अपनाई गई तथा 200 विद्यार्थियों (100 सरकारी एवं 100 निजी विद्यालयों से) के न्यादर्श पर समायोजन क्षमता मापनी प्रशासित की गई। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन और t-परीक्षण का प्रयोग किया गया। निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की भावात्मक, शैक्षिक एवं कुल समायोजन क्षमता सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों से सार्थक रूप से अधिक पाई गई, जबकि सामाजिक समायोजन में अन्तर सार्थक नहीं था। अध्ययन के निष्कर्ष विद्यालयी परामर्श, शिक्षक-प्रशिक्षण और सरकारी विद्यालयों में सहायक सेवाओं के सुदृढ़ीकरण की ओर संकेत करते हैं।

मुख्य शब्द: समायोजन क्षमता, माध्यमिक विद्यार्थी, सरकारी विद्यालय, निजी विद्यालय, समस्तीपुर, तुलनात्मक अध्ययन

1. प्रस्तावना

किशोरावस्था शारीरिक, भावनात्मक और सामाजिक परिवर्तनों की अवस्था है। एरिक्सन (1968) ने इस अवस्था को पहचान-निर्माण के संकट से जोड़ा है, जबकि हरलॉक (1980) के अनुसार इस काल में किशोर को नई सामाजिक अपेक्षाओं के साथ तालमेल बैठाना पड़ता है। माध्यमिक

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 5
September-October: 2026

स्तर का विद्यार्थी इसी अवस्था में होता है, इसलिए विद्यालय का वातावरण उसके समायोजन को गहराई से प्रभावित करता है।

समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं और परिवेश की माँगों के बीच सन्तुलन स्थापित करता है (शैफ़र, 1936; लाज़रस, 1969)। सुसमायोजित विद्यार्थी भावनात्मक रूप से स्थिर, सामाजिक रूप से सहज और शैक्षिक रूप से सक्रिय होता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी विद्यार्थियों के समग्र विकास, सामाजिक-भावनात्मक अधिगम और विद्यालयी वातावरण की गुणवत्ता पर बल देती है (भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय, 2020)।

बिहार के समस्तीपुर जिले में सरकारी और निजी, दोनों प्रकार के माध्यमिक विद्यालय संचालित हैं। इनके संसाधनों, कक्षा-आकार, शिक्षक-विद्यार्थी अन्तःक्रिया और पारिवारिक पृष्ठभूमि में अन्तर सम्भव है। अतः यह जानना उपयोगी है कि दोनों प्रकार के विद्यालयों के विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अन्तर है या नहीं।

2. समायोजन क्षमता की अवधारणा

इस अध्ययन में समायोजन क्षमता को तीन आयामों में देखा गया है:

- भावात्मक समायोजन: अपनी भावनाओं को पहचानने, नियन्त्रित करने और तनाव का सामना करने की क्षमता।
- सामाजिक समायोजन: सहपाठियों, शिक्षकों और परिवार के साथ स्वस्थ सम्बन्ध बनाने और सामाजिक नियमों के अनुरूप व्यवहार करने की क्षमता।
- शैक्षिक समायोजन: पढ़ाई, विद्यालयी कार्यों, शिक्षण-पद्धति और परीक्षा-सम्बन्धी माँगों के साथ तालमेल बैठाने की क्षमता।

3. शोध की आवश्यकता एवं औचित्य

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 5
September-October: 2026

विद्यार्थियों की समायोजन-सम्बन्धी समस्याएँ उनकी शैक्षिक उपलब्धि, आचरण और मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती हैं। यदि विद्यालय के प्रकार के आधार पर समायोजन में अन्तर पाया जाए, तो नीति-निर्माता, प्रधानाध्यापक और शिक्षक लक्षित हस्तक्षेप कर सकते हैं। समस्तीपुर जैसे जिले के लिए इस प्रकार का स्थानीय तुलनात्मक अध्ययन विद्यालयी परामर्श और सहायक सेवाओं की योजना में सहायक हो सकता है।

4. शोध के उद्देश्य

- समस्तीपुर जिले के सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता का अध्ययन करना।
- समस्तीपुर जिले के निजी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता का अध्ययन करना।
- सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की भावात्मक, सामाजिक, शैक्षिक तथा कुल समायोजन क्षमता की तुलना करना।

5. शोध परिकल्पनाएँ

उद्देश्यों के अनुरूप निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाएँ बनाई गईं:

- $H_0$1: सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की भावात्मक समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- $H_0$2: सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सामाजिक समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- $H_0$3: सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 5
September-October: 2026

- $H_0$4: सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की कुल समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

6. शोध-पद्धति

6.1 शोध-विधि

अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि के अन्तर्गत तुलनात्मक (कारणात्मक-तुलनात्मक) अभिकल्प अपनाया गया (कोठारी, 2004; बेस्ट एवं काहन, 2006)।

6.2 जनसंख्या एवं न्यादर्श

अध्ययन की जनसंख्या समस्तीपुर जिले के सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थी हैं। दोनों प्रकार के विद्यालयों से 100-100 विद्यार्थियों का चयन सरल यादृच्छिक प्रतिचयन द्वारा किया गया, जिससे कुल न्यादर्श 200 रहा।

विद्यालय का प्रकार	विद्यार्थियों की संख्या	प्रतिशत
सरकारी माध्यमिक विद्यालय	100	50%
निजी माध्यमिक विद्यालय	100	50%
कुल	200	100%

6.3 शोध-उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता के मापन हेतु ए. के. पी. सिन्हा एवं आर. पी. सिंह द्वारा निर्मित समायोजन क्षमता मापनी (Adjustment Inventory for School Students–AISS) का उपयोग किया जा सकता है। यह मापनी विद्यार्थियों के समायोजन का आकलन करने के लिए प्रयुक्त होती है।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 5
September-October: 2026

इस मापनी के माध्यम से विद्यार्थियों के समायोजन के विभिन्न पक्षों का अध्ययन किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध में भावात्मक, सामाजिक तथा शैक्षिक समायोजन के आधार पर सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता की तुलना की गई है।

6.4 आँकड़ों का विश्लेषण

आँकड़ों के विश्लेषण में मध्यमान (M), मानक विचलन (SD) तथा दो स्वतन्त्र समूहों के मध्यमानों की तुलना हेतु t-परीक्षण का प्रयोग किया गया (गैरेट, 2007)। सार्थकता का स्तर .05 एवं .01 रखा गया। अन्तर की व्यावहारिक मात्रा जानने के लिए प्रभाव-आकार (कोहेन का d) भी निकाला गया।

6.5 परिसीमन

अध्ययन समस्तीपुर जिले के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों और केवल सरकारी एवं निजी विद्यालयों की तुलना तक सीमित है।

7. परिणाम एवं विश्लेषण

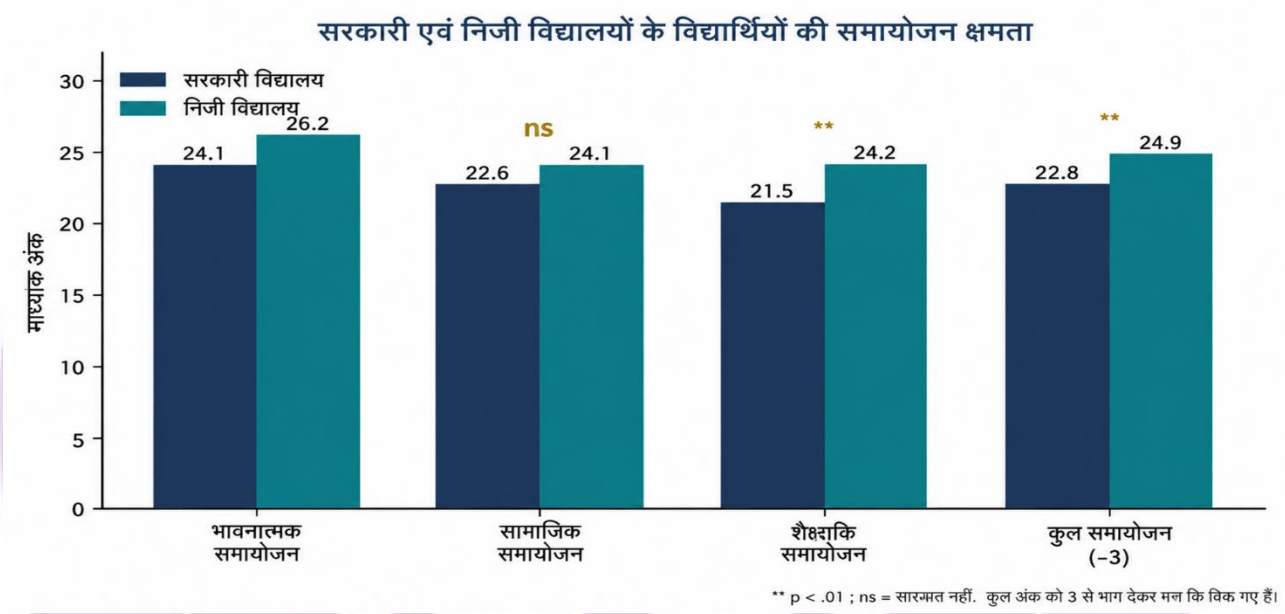
सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता के मध्यमान, मानक विचलन तथा t-मान तालिका 2 में प्रस्तुत हैं।

समायोजन का आयाम	सरकारी M	SD	निजी M	SD	t-मान	सार्थकता (df = 198)	प्रभाव-आकार (d)
भावात्मक समायोजन	24.1	5.2	26.3	5	3.05	सार्थक (.01)	0.43
सामाजिक समायोजन	22.8	4.9	24.1	4.7	1.91	सार्थक नहीं	0.27
शैक्षिक समायोजन	21.5	5	24.2	4.8	3.9	सार्थक (.01)	0.55

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 5
September-October: 2026

समायोजन का आयाम	सरकारी M	SD	निजी M	SD	t-मान	सार्थकता (df = 198)	प्रभाव-आकार (d)
कुल समायोजन	68.4	12.6	74.6	11.9	3.58	सार्थक (.01)	0.51

तालिका 2: सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता की तुलना (प्रत्येक समूह N = 100; उच्च अंक = बेहतर समायोजन)



चित्र 1: आयाम-वार मध्यमान की तुलना

7.1 भावात्मक समायोजन ($H_0 1$)

तालिका 2 के अनुसार निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों का भावात्मक समायोजन मध्यमान (26.3) सरकारी विद्यालयों (24.1) से अधिक है। t-मान 3.05 .01 स्तर पर सार्थक है। अतः $H_0 1$ अस्वीकृत की जाती है। प्रभाव-आकार (d = 0.43) अन्तर को निम्न-से-मध्यम स्तर का दर्शाता है।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 5
September-October: 2026

7.2 सामाजिक समायोजन ($H_0$2)

सामाजिक समायोजन में निजी विद्यालयों का मध्यमान (24.1) सरकारी विद्यालयों (22.8) से कुछ अधिक है, किन्तु t-मान 1.91 .05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः $H_0$2 स्वीकृत की जाती है, अर्थात् सामाजिक समायोजन में दोनों समूहों के बीच कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

7.3 शैक्षिक समायोजन ($H_0$3)

शैक्षिक समायोजन में निजी विद्यालयों का मध्यमान (24.2) सरकारी विद्यालयों (21.5) से अधिक है और t-मान 3.9 .01 स्तर पर सार्थक है। अतः $H_0$3 अस्वीकृत की जाती है। यह सबसे बड़ा अन्तर है (d = 0.55).

7.4 कुल समायोजन ($H_0$4)

कुल समायोजन में निजी विद्यालयों का मध्यमान (74.6) सरकारी विद्यालयों (68.4) से अधिक है, और t-मान 3.58 .01 स्तर पर सार्थक है। अतः $H_0$4 अस्वीकृत की जाती है।

8. परिणामों की चर्चा

निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों में भावात्मक और शैक्षिक समायोजन का अधिक होना कई कारकों से जुड़ा हो सकता है, जैसे छोटे कक्षा-आकार, शिक्षक-विद्यार्थी के बीच अधिक नियमित अन्तःक्रिया, अभिभावकों की अधिक भागीदारी और निरन्तर मूल्यांकन-प्रणाली। परन्तु इन कारणों को इस अध्ययन में सीधे नहीं मापा गया है, इसलिए इन्हें केवल सम्भावित व्याख्या के रूप में लिया जाना चाहिए। सामाजिक समायोजन में सार्थक अन्तर न मिलना यह संकेत दे सकता है कि सहपाठियों और समुदाय के साथ सम्बन्ध-निर्माण दोनों प्रकार के विद्यालयों में समान रूप से सहज है, क्योंकि ग्रामीण-अर्द्धशहरी परिवेश में विद्यार्थी प्रायः एक ही समुदाय से आते हैं।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 5
September-October: 2026

9. शैक्षिक निहितार्थ

- सरकारी विद्यालयों में परामर्श-सेवाओं और भावात्मक-सामाजिक अधिगम की गतिविधियों को बढ़ावा दिया जाए।
- शिक्षकों को विद्यार्थियों की व्यक्तिगत समस्याओं की पहचान और सहानुभूतिपूर्ण संवाद का प्रशिक्षण मिले।
- विद्यालय और अभिभावकों के बीच नियमित संवाद, जैसे अभिभावक-शिक्षक बैठकें, सुदृढ़ किया जाए।
- शैक्षिक समायोजन सुधारने हेतु सहायक शिक्षण और उपचारात्मक कक्षाओं की व्यवस्था की जाए।

10. निष्कर्ष

अध्ययन में निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की भावात्मक, शैक्षिक और कुल समायोजन क्षमता सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों से सार्थक रूप से अधिक पाई गई, जबकि सामाजिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं मिला। अन्तर की मात्रा निम्न-से-मध्यम स्तर की है, इसलिए इसे विद्यालय के प्रकार का निर्णायक प्रभाव मानना उचित नहीं होगा। भविष्य के अध्ययनों में लिंग, कक्षा, पारिवारिक आय और अभिभावक-शिक्षा जैसे चरों को जोड़ा जा सकता है और बड़े न्यादर्श के साथ अन्य जिलों से तुलना की जा सकती है।

संदर्भ-सूची

भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 [National Education Policy 2020]. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।

Best, J. W., & Kahn, J. V. (2006). Research in education (10th ed.). Pearson Education.

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 5
September-October: 2026

Erikson, E. H. (1968). Identity: Youth and crisis. W. W. Norton.

Garrett, H. E. (2007). Statistics in psychology and education. Paragon International Publishers.

Hurlock, E. B. (1980). Developmental psychology: A life-span approach (5th ed.). McGraw-Hill.

Kothari, C. R. (2004). Research methodology: Methods and techniques (2nd ed.). New Age International.

Lazarus, R. S. (1969). Patterns of adjustment and human effectiveness. McGraw-Hill.

Shaffer, L. F. (1936). The psychology of adjustment. Houghton Mifflin.